पाठ–2

नादान दोस्त

केशव के घर कार्निस के ऊपर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते–जाते देखा करते। सवेरे दोनों आँखें मलते कार्निस के सामने पहुँच जाते और चिड़ा और चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते।

उनको देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मज़ा मिलता, दूध और जलेबी की सुध भी न रहती थी। दोनों के दिल में तरह–तरह के सवाल उठते। अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? क्या खाते होंगे? कितने होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं। न अम्मा को घर के काम–धंधों से फुरसत थी, न बाबू जी को पढ़ने–लिखने से। दोनों बच्चे आपस ही में सवाल–जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे।

श्यामा कहती–क्यों भइया, बच्चे निकलकर फुर्र–से उड़ जाएँगे?

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता–नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे। बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे?

श्यामा– बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी?

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था।

इस तरह तीन–चार दिन गुजर गए। दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन–दिन बढ़ती जाती थी। अंडों को देखने के लिए वे अधीर हो उठते थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब जरूर बच्चे निकल आए होंगे। बच्चों के चारे (चुग्गे) का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ।

चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ पाएगी के सारे बच्चों का पेट भरे! गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ–चूँ करके मर जाएँगे।

इस मुसीबत का अंदाज़ा करके दोनों घबरा उठे। दोनों ने फैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा–सा दाना रख दिया जाए। श्यामा खुश होकर बोली–तब तो चिड़ियों को चारे (चुग्गे) के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा न?

केशव– नहीं तब क्यों जाएँगी?

श्यामा– क्यों भइया, बच्चों को धूप न लगती होगी?

केशव का ध्यान इस तकलीफ़ की तरफ़ न गया था। बोला–जरूर तकलीफ़ हो रही होगी। बेचारे प्यास के मारे तड़पते होंगे। ऊपर छाया भी तो कोई नहीं।

आखिर यही फ़ैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए। पानी की प्याली और थोड़े–से चावल रख देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया।

दोनों बच्चे बड़े चाव से काम करने लगे। श्यामा माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई। केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से ज़मीन पर गिरा दिया और उसे खूब साफ़ करके उसमें पानी भरा।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से आए? फिर ऊपर बगैर छड़ियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और छड़ियाँ खड़ी होंगी कैसे?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा। आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी। श्यामा से बोला– जाकर कूड़ा फेंकने वाली टोकरी उठा लाओ। अम्मा जी को मत दिखाना।

श्यामा– वह तो बीच से फटी हुई है। उसमें से धूप न जाएगी?

केशव ने झुँझलाकर कहा– तू टोकरी तो ला, मैं उसका सुराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई। केशव ने उसके सुराख में थोड़ा–सा कागज ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला–देख, ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ कर दूँगा। तब कैसे धूप जाएगी?

श्यामा ने दिल में सोचा, भइया कितने चालाक हैं।

गरमी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। अम्मा दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थी। लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? अम्मा जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके, आँखें बंद किए, मौके का इंतजार कर रहे थे। ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्मा जी अच्छी तरह से सो गईं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए। अंडों की हिफ़ाज़त की तैयारियाँ होने लगीं। केशव कमरे से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला तो नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते–डरते स्टूल पर चढ़ा।

श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी। स्टूल की चारों टाँगें बराबर न होने के कारण जिस तरफ़ ज़्यादा दबाव पाता था, जरा–सा हिल जाता था। उस वक्त केशव को कितनी तकलीफ़ उठानी पड़ती

थी, यह उसी का दिल जानता था। दोनों हाथों से कार्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज़ से डाँटता–अच्छी तरह पकड़, वरना उतरकर बहुत मारूँगा। मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कार्निस पर था। बार–बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते।

केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं। केशव ने देखा, कार्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा– कै बच्चे हैं भइया?

केशव– तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले।

श्यामा– ज़रा हमें दिखा दो भइया, कितने बड़े हैं?

केशव– दिखा दूँगा, पहले ज़रा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं।

श्यामा दौड़कर अपनी पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा–हमको भी दिखा दो भइया।

केशव– दिखा दूँगा, पहले ज़रा वह टोकरी तो दे दो, ऊपर छाया कर दूँ।

श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली–अब तुम उतर आओ, मैं भी तो देखूँ?

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा–जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा।

श्यामा प्याली और चावल भी लाई। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीज़ें रख दीं और आहिस्ता से उतर आया।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा– अब हमको भी चढ़ा दो भइया।

केशव– तू गिर पड़ेगी।

श्यामा– न गिरूँगी भइया, तुम नीचे से पकड़े रहना।

केशव– न भइया, कहीं तू गिर–गिरा पड़ी तो अम्मा जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी। कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर? अब अंडे बड़े आराम से हैं। जब बच्चे निकलेंगे तो उनको पालेंगे।

दोनों चिड़ियाँ बार–बार कार्निस पर आती थीं और बगैर बैठे ही उड़ जाती थीं। केशव ने सोचा, हम लोगों के डर से नहीं बैठतीं। स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा,– तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्मा जी से कह दूँगी।

केशव– अम्मा जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ।

श्यामा– तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं?

केशव– और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते।

श्यामा– हो जाते तो हो जाते! देख लेना मैं कह दूँगी!

इतने में कोठरी का दरवाज़ा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा–तुम दोनों बाहर कब निकल आए? मैंने कहा न था कि दोपहर को न निकलना। किसने किवाड़ खोला?

किवाड़ केशव ने खोला था, लेकिन श्यामा ने माँ से बात नहीं कही। उसे डर लगा कि भइया

पिट जाएँगे। केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे। अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था। श्यामा सिर्फ़ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से, इसका फैसला नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।

माँ ने दोनों को डाँट–डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे–धीरे उन्हें पंखा झलने लगी। अभी सिर्फ़ दो बजे थे। बाहर तेज लू चल रही थी। अब दोनों बच्चों को नींद आ गई थी।

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई कार्निस के पास आई और ऊपर की तरफ़ ताकने लगी। टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नज़र नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर जोर से बोली– भइया, अंडे तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए।

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया तो क्या देखता है कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं। और उनसे कोइ चूने की–सी चीज़ बाहर निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया।सहमी हुई आँखों से ज़मीन की तरफ देखने लगा।श्यामा ने पूछा–बच्चे कहाँ उड़ गए भइया?

केशव ने करुण स्वर में कहा–अंडे तो फूट गए।

श्यामा– और बच्चे कहाँ गए?

केशव– तेरे सर में! देखती नहीं है अंडों में से उजला–उजला पानी निकल आया है। वही तो दो–चार दिनों में बच्चे बन जाते।

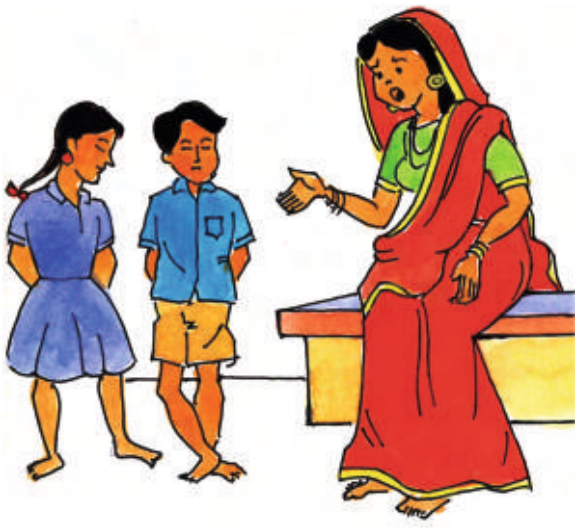

माँ ने सोटी हाथ में लिए हुए पूछा– तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो?

श्यामा ने कहा– अम्मा जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं।

माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से बोली – तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा।

अब तो श्यामा को भइया पर ज़रा भी तरस न आया। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया

कि वह नीचे गिर पड़े।इसकी उसे सज़ा मिलनी चाहिए। बोली–इन्होंने अंडों को छेड़ा था अम्मा जी।
माँ ने केशव से पूछा– क्यों रे?
केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।
माँ– तू वहाँ पहुँचा कैसे?
श्यामा– चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े अम्मा जी।
केशव– तू स्टूल थामे नहीं खड़ी थी?
श्यामा– तुम्हीं ने तो कहा था।
माँ– तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती।
श्यामा ने डरते–डरते पूछा– तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं अम्मा जी?
माँ– और क्या करती ?केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा। हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने!

केशव रोनी सूरत बनाकर बोला–मैंने तो सिर्फ़ अंडों को गद्दी पर रख दिया था अम्मा जी।

माँ को हँसी आ गई। मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफ़सोस होता रहा। अंडों की हिफ़ाज़त करने के जोग में उसने उनका सत्यानाश कर डाला। इसे याद कर वह कभी–कभी रो पड़ता था। दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर न दिखाई दीं।

प्रेमचंद

शब्दार्थ

पेचीदा	–	कठिन	जिज्ञासा	–	जानने की इच्छा
अधीर	–	चंचल, धैर्यरहित	तकलीफ़	–	परेशानी
चाँदनी	–	चँदोवा	उधेड़बुन	–	असमंजस
हिकमत	–	उपाय	दफ़्तर	–	कार्यालय
हिफ़ाज़त	–	रक्षा	मुहब्बत	–	प्रेम
आहिस्ता	–	सावधानीपूर्वक, धीरे से	कार्निस	–	छज्जा

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

हिफ़ाज़त, हिकमत, आहिस्ता, मुहब्बत,

सोचें और बताएँ

1. केशव व श्यामा अंडों की रक्षा क्यों करना चाहते थे?
2. केशव व श्यामा के प्रयासों का क्या परिणाम निकला?
3. यदि केशव ने अंडों को न छुआ होता तो क्या होता?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. कार्निस पर चिड़िया ने अंडे दिए थे –

   (क) 2 (ख) 3 (ग) 4 (घ) 5 ( )

2. चिड़िया के अंडों को चिथड़े, पानी, दाना आदि की व्यवस्था करना केशव व श्यामा का प्रयास अंततः हुआ–

   (क) सार्थक (ख) नादानी (ग) मनोरंजक (घ) आत्मघाती ( )

किसने, किससे कहा–

1. बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी ?
2. जाकर कूड़ा फेंकने वाली टोकरी उठा लाओ।
3. तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले।
4. तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. केशव ने किसकी सहायता से कार्निस पर चिथड़े बिछाकर टोकरी व दाना पानी रखा था?
2. केशव व श्यामा ने अंडों के बारे में क्या–क्या अनुमान लगाए ?
3. केशव को अपने किए पर पछतावा क्यों हुआ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. बच्चों द्वारा चिड़ियों के अंडों की रक्षा का जो प्रयत्न किया गया उसका क्या परिणाम हुआ ?
2. पशु–पक्षी की रक्षा के समय हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और रेखांकित पदों के स्थान पर निम्नलिखित शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर लिखिए–

(अपनी, उससे, उसकी, उसने, उसे, उस,)

श्यामा_दौड़कर श्यामा की पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने झुककर श्यामा से कपड़ा ले लिया। कपड़े की कई तह करके केशव ने एक गद्दी बनाई और गद्दी को तिनकों पर बिछाकर तीनों अंड़े धीरे से गद्दी पर रख दिए। श्यामा ने फिर कहा– हमको भी दिखा दो भैया।

संज्ञा शब्द को बार–बार न लिखकर उसके स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम के छह भेद होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – मैं, हम, उस, उसका, तुम, वह, वे
2. निश्चयवाचक सर्वनाम – यह, वह
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई, कुछ
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम – कौन, क्या

5. संबंधवाचक सर्वनाम – जो, सो, जिसकी, उनकी
6. निजवाचक सर्वनाम – अपनी, अपना, स्वयं

आप भी पाठ में आए सर्वनाम शब्दों को छाँटकर लिखिए।

2. कोई, किसी और कुछ का प्रयोग

(अ). 'कोई' और 'किसी' अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं, इन दोनों का प्रयोग सजीव प्राणियों के लिए किया जाता है।

जैसे– दरवाज़े पर कोई खड़ा है। किसी को भी बुला लाओ।

(ब). 'कुछ' शब्द का प्रयोग निर्जीव वस्तुओं, कीड़े–मकोड़े एवं कीटाणुओं के लिए किया जाता है।

जैसे–झाड़ियों में कुछ है। दूध में कुछ गिरा है।

पाठ से आगे

1. अगर आप केशव के स्थान पर होते तो अंडों की देखभाल किस प्रकार करते ?
2. आपके आसपास कोई घायल पशु–पक्षी मिलता है, तो उसकी रक्षा के लिए आप क्या उपाय करेंगे।

यह भी करें

1. आपके आस–पास कौन–कौनसे पशु–पक्षी पाए जाते हैं, उनकी सूची बनाइए।

सृजन

आपकी पसंद के किसी पक्षी का चित्र बनाइए और उसमें रंग भरिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

As You sow so shall you reap.

जैसा करोगे वैसा फल पाओगे।

केवल पढ़ने के लिए

पहेलियाँ

1. कौन व्यक्ति था जो भारत का राष्ट्रपिता कहलाया,
सत्य–अहिंसा से भारत की आज़ादी ले आया ?

2. 'जय जवान–जय किसान' जिसका था नारा,
कौन था वह ईमानदार देश का दुलारा ?

3. राष्ट्र एकता के माने में रह न सका जो मौन,
आजीवन सरदार रहा वह लौहपुरुष था कौन ?

4. दृढ़ निश्चय, उर्वर साहस की वह थी कौन भवानी ?
मनु कहो या लक्ष्मी जिसकी हर युग कह रहा कहानी।

5. बेजुबान फिर भी मै बोलूँ, सारी दुनिया दिल पर ढोलूँ।
मैं लोगों का दिल बहलाता, अब बोलो मैं क्या कहलाता।।

6. दो भाई हैं; एक रंग–रूप, दोनों में है पटती खूब।
यदि एक गुम हो जाता, दूसरा कोई काम ना आता।

6.जूते 5.रेडियो 4.झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई
3.सरदार वल्लभ भाई पटेल 2.लाल बहादुर शास्त्री 1.महात्मा गांधी